ISSN-2582-144X

खुली आंख से सपने देखों...

अनिल कुमार सिंह
प्रधान सम्पादक

खुली आंख मे सपनय होवे बंद आंख मे नींदय होवे
सपने मे उ ताकत होवे नीद कभी ना आवन देवे
दिवास्वपन से कुछ ना होवे सिर्फ निराशा गले लगावे
मेहनत का कोई तोड ना होये आलस का कोइ जोग ना होवे

खुली आंख से देखों सपने बंद आंख से नींद
लगातार तुम मेहंत करना सपनों को तुम पूरा करना
सपने है अनमोल तुम इनको पूरा करना
बाधाओं को परीक्षा समझना हिम्म्मत से तुम आगे बढ़ना

लिखना खुद तकदीर विधाता स्वयम ही बनना
मेहनत से तक्दीर बनेगी पूरे भी होगे ख्वाब
सुखदा की अनुभुति होगी चिंता भी होगी दूर
चिंतन मनन जरूरी है पर चिंता से रहना दूर

मेहनत मस्ती बारी बारी विश्वसघात से करों ना यारी
रिश्ते है अनमोल ना इनसे वंचित रहना
याद रहे ये सीख सदा समर्पित रहना
निश्छल प्रेम मे करे चतुराई तीनों लोक मे नहीं सुनवायी

ज्यादा झुक कर काम ना करना कमर जायेगी टूट
अति का सदा विसर्जन करना याद रहे ये सीख
लिखा भाग्य का कोई ना लेगा भाग्य से ज्यादा कोई ना देगा
प्रभु लीला है अपरम्पार नेकी कर दरिया में डाल